30

एक व्यस्त दिन

बाइबल पाठ #11

V. दूसरे से तीसरे फसह तक (क्रमशः)।
   ट. गलील का दूसरा दौरा (लूका 8:1-3)।
   ठ. परमेश्वर की निंदा के आरोप (मत्ती 12:22-37; मरकुस 3:20-30; लूका 11:14-23)।
   ड. चिह्न ढूंढ़ने वाले (मत्ती 12:38-45; लूका 11:16, 24-26, 29-36)।
   ढ. यीशु का परिवार (मत्ती 12:46-50; मरकुस 3:31-35; लूका 8:19-21; 11:27, 28)।

परिचय

क्या आपके जीवन में कभी ऐसा दिन आया है, जिसमें आप इतने व्यस्त रहे हों कि आपको खाना खाने के लिए समय ही न मिला हो? यह पाठ यीशु के जीवन के एक ऐसे ही दिन के बारे में है। मसीह की सेवकाई के कुछ दिनों के बारे में ही विस्तार से बताया गया है। उनमें से एक दिन उसकी मृत्यु से पहले का मंगलवार था, जिसे ''प्रश्नों का दिन'' के रूप में जाना जाता है। इस अध्ययन में एक और दिन की बात है। इसे ''एक व्यस्त दिन'' कहना उपयुक्त है।[1]

यह दिन यीशु के गलील के दूसरे दौरे के अन्त में (या अन्त के निकट) आया। पिछले पाठ में, मसीह कफ़रनहूम से नाईन में (लूका 7:1, 11) और फिर कई ऐसी जगहों पर गया, जिनका नाम नहीं बताया गया है (लूका 7:20, 21, 36, 37)। लूका ने लिखा है कि ''इस के बाद वह नगर-नगर और गांव-गांव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ, फिरने लगा'' (लूका 8:1)।[2]

गलील की पहली यात्रा के समय, यीशु के साथ केवल चार चेले थे।[3] इस यात्रा पर, शागिर्दी के लिए बारह लोग उसके साथ थे। यीशु के साथ उसके पीछे रहने वाली भीड़ भी होगी।[4]

लूका ने लिखा है कि कुछ स्त्रियां, जिनकी यीशु ने सहायता की थी, उसके और प्रेरितों के साथ थीं। वे ''अपनी सम्पत्ति से उसकी सेवा करती थीं'' (लूका 8:3ख)।[5] यहूदी स्त्रियों के लिए अपने गुरुओं की सहायता करना नई बात नहीं थी। इनमें से कुछ के नाम दिए गए हैं: ''मरियम जो मगदलीनी कहलाती थी, जिस में से सात दुष्टात्माएं निकली थीं।[6] और हेरोदेस के भण्डारी खुज़ा की पत्नी योअन्ना और सूसन्नाह'' (लूका 8:2ख, 3क)।

मरियम को ''मगदलीनी'' कहा जाता था, ज़्योंकि वह गलील की झील के पश्चिमी तट पर स्थित मगदला नामक छोटे से गांव की रहने वाली थी।[7] हम उससे दोबारा मिलेंगे (मरकुस 15:47; 16:1, 9; यूहन्ना 19:25; 20:1-18)।

योअन्ना का परिचय उसके पति खुज़ा द्वारा कराया गया था, जो ''हेरोदेस का भण्डारी'' था। ''भण्डारी'' के लिए यूनानी शास्त्र में शज़्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है, बल्कि प्रयुज़्त शज़्द का अर्थ ''प्रबन्धक, अधीक्षक या राज्यपाल'' है।[8] द लिविंग बाइबल का वाज़्यांश है ''खुज़ा हेरोदेस राजा का बिज़नेस मैनेजर और उसके महल तथा घरेलू मामलों का इन्चार्ज था।'' यीशु का संदेश हेरोदेस के घराने तक पहुंच चुका था। हम यूहन्ना से बाद में मिलेंगे (लूका 24:10)।

सुसन्नाह के बारे में हम और कहीं नहीं पढ़ते। जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे ने लिखा है कि ''सुसन्नाह के बारे में और कुछ लिखा नहीं मिलता, उसे अमर करने के लिए यही काफ़ी था।''[9]

यीशु के दौरे में वापस जाकर, हम पढ़ते हैं कि एक दिन ''वह घर में आया: और ऐसी भीड़ इकट्ठी हो गई'' (मरकुस 3:20क)। इसका अर्थ यही हो सकता है कि दौरे के दौरान मसीह किसी मेज़बान के घर आया।[10] ज़्योंकि अगली घटनाएं यीशु के ''झील के किनारे'' उपदेश देने की हैं (मरकुस 4:1), इसलिए यह अधिक सज़्भव है कि वह अपनी इस यात्रा के अन्त में कफ़रनहूम में लौट गया था और उस नगर में रहने के लिए उसका सामान्य निवास वह ''घर'' ही था।

नगर जो भी हो, हम कुछ घटनाओं की समीक्षा करेंगे, जो वहां एक ''व्यस्त दिन'' में घटीं। उसी दिन, यीशु ने सज़्भवतया मज़ी 13, मरकुस 4, और लूका 8 में लिखित दृष्टांत दिए (देखें मज़ी 12:50-13:3)। दिन का अन्त सज़्भवतया गलील की झील में आए एक तूफ़ान को शान्त करने और गिरासेन में दुष्टात्मा से ग्रस्त एक आदमी को चंगा करने से हुआ (मरकुस 4:33-5:19)। इन घटनाओं का अध्ययन हम अगले पाठों में करेंगे। अभी आइए यह देखते हैं कि इस दिन का आरज़्भ कैसे हुआ।

लोगों की सहायता करने में व्यस्त (मज़ी 12:22, 23; मरकुस 3:20, 21; लूका 11:14)

यीशु प्रार्थना करने के लिए भोर के समय लोगों से अलग बाहर एकान्त में चला जाता था (मरकुस 1:35)। हमारी कहानी के आरज़्भ में, मसीह उस जगह वापस जा रहा था, जहां वह ठहरा हुआ था, शायद नाश्ता करने के लिए। उसके वहां पहुंचने पर उसे सुनने को उत्सुक या चंगाई पाने के लिए लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा था (देखें मरकुस 2:1, 2)। मरकुस 3:20 कहता है कि, ''वह घर में आया: और ऐसी भीड़ इकट्ठी हो गई, कि वे [यीशु और उसके चेले] खाना भी न खा सके।''[11] बिना किसी परेशानी के मसीह उनकी सहायता करने लगा।

एक विशेष आश्चर्यकर्म लिखा गया है, जो समझ, नज़र और आवाज़ लौटाने का तिहरा आश्चर्यकर्म है: यीशु ने एक आदमी में से, जो अन्धा और बोलने में असमर्थ था,

दुष्टात्मा को निकाला[12] (मत्ती 12:22)। लोगों ने हैरान होकर कहा, ''यह ज़्या दाऊद की सन्तान का है?''[13] (मत्ती 12:23ख)।

किसी तरह, मसीह की अति व्यस्त समयसारणी की बात उसके कुछ मित्रों तथा परिवार वालों के कानों में पड़ गई:[14] ''जब उसके कुटुम्बियों ने यह सुना, तो उसे पकड़ने के लिए[15] निकले; ज़्योंकि वे कहते थे, कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है'' (मरकुस 3:21)। सांसारिक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आवश्यक बलिदान देने पर अधिकतर लोग सहानुभूति रखते हैं, ज़्योंकि उन्हें समझ होती है कि सांसारिक कार्य के लिए कितना समय देना आवश्यक है। परन्तु अधिकतर लोग यह नहीं समझ पाते कि कोई परमेश्वर के राज्य के लिए अपने आप को देने को ज़्यों तैयार है। परिवार के सदस्यों को लगा कि प्रभु का ''चित्त ठिकाने नहीं है।'' यदि आपने परमेश्वर को प्राथमिकता देने की गम्भीरतापूर्वक प्रतिबद्धता की है (मत्ती 6:33), तो कुछ लोगों द्वारा यह आरोप लगाने पर कि आपका चित्त ठिकाने नहीं है, हैरान न हों![16]

आरोपों का उत्तर देने में व्यस्त (मत्ती 12:24-37; मरकुस 3:22-30; लूका 11:15-23[17])

यीशु के शिक्षा देने और लोगों को चंगा करने के समय, फरीसी और शास्त्री (मत्ती 12:24; मरकुस 3:22) सामान्य की भांति वहीं थे। कई तो उसे परेशान करने के लिए ''यरूशलेम से'' (मरकुस 3:22क) आए हुए थे। भीड़ के यह मानने से कि वह ''दाऊद का पुत्र'' हो सकता है (मत्ती 12:23), स्पष्टतया उस के प्रति उनकी घृणा बढ़ गई थी। यह इनकार न कर पाने पर कि मसीह आश्चर्यकर्म कर रहा था, उन्होंने उस पर शैतान के साथ गठजोड़ होने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, ''उस में बालज़बूल है''[18]; ''वह दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है''[19] (मरकुस 3:22ख)।

यीशु ने उनके आरोप का उत्तर तीन तर्कों से दिया।[20] पहले तो उसने कहा कि उनका आरोप ही *तर्क विरुद्ध* है: ''जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है; और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा। और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उस का राज्य ज़्योंकर बना रहेगा?'' (मत्ती 12:25, 26)।

दूसरा, उसने कहा कि उनका आरोप *असंगत* है: उनका मानना था कि उनके अपने ''पुत्र'' (अर्थात, चेले) दुष्टात्माओं को निकाल सकते थे (मत्ती 12:27), परन्तु उनका यह विश्वास नहीं था कि उनके अनुयायी शैतान की सामर्थ से दुष्टात्माओं को निकालते हैं।[21] मसीह के विरुद्ध लगाया जाने वाला कोई भी आरोप उनके अपने साथियों के विरुद्ध था और होना भी चाहिए।[22]

तीसरा, उसने कहा कि उनका आरोप *असम्भव* था: किसी बलवान के घर को लूटने के लिए पहले उस बलवान (शैतान) को बांधना आवश्यक था (मत्ती 12:29)।[23] दुष्टात्माओं को निकालकर, यीशु शैतान को हरा रहा था, न कि उसका समर्थन कर रहा था।

फिर यीशु बचाव से आक्रमणकारी हो गया: ''इसलिए मैं तुम से कहता हूं, मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, पर [पवित्र] आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी'' (मत्ती 12:31)। ''निन्दा'' शब्द का अर्थ ''विरुद्ध बोलना'' है। शास्त्री और फरीसी पवित्र आत्मा के विरुद्ध बोलने के दोषी थे, क्योंकि वे आत्मा के काम को (मत्ती 12:28) शैतान का काम बता रहे थे। मसीह ने कहा कि ''जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा'' (मत्ती 12:32)।

इस बात को समझें कि यीशु ने अपने शत्रुओं को जुबान फिसलने के लिए दोषी नहीं ठहराया था। बल्कि, उसने उनके मन की कठोरता के कारण उन्हें उलाहना दिया था। उसने ज़ोर दिया कि ''जो *मन* में भरा है, वही मुंह पर आता है'' (मत्ती 12:34ख)। उन्होंने अपना मन ऐसा बना लिया था कि वे ''बुरे को भला और भले को बुरा'' कहते थे (यशायाह 5:20)। शास्त्रियों और फरीसियों की यह सोचनीय स्थिति कैसे हो गई थी? इसका उज़र है, आत्मा के दिए प्रमाण को बार-बार और लगातार ठुकराते रहने से, जिसमें यीशु के मसीहा होने का प्रमाण था, उनके मन पत्थर हो गए थे (यूहन्ना 12:40)।

कई बार लोग हैरान होते हैं कि कहीं उन्होंने ''पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप'' तो नहीं कर दिया। किसी बुज़ुर्ग सियाने प्रचारक ने कहा था, ''अगर आपको लगता है कि आपने पाप किया है तो आपने नहीं किया है।'' उसके कहने का यह अर्थ था कि इस बात का विचार ही यह प्रमाण है कि उसने अपने मन को कठोर नहीं किया है। वास्तव में अब, जबकि यीशु पृथ्वी पर विचर नहीं रहा है और आत्मा की सामर्थ से आश्चर्यकर्म नहीं कर रहा है, तो आप हों या मैं, हम फरीसियों *वाले* पाप के दोषी नहीं हैं। फिर भी, हम *वैसे* ही पाप के दोषी हो सकते हैं, जिसमें हम अपने मनों को इतने कठोर बना सकते हैं कि ''मन फिराव के लिए फिर नया बनाना अनहोना'' हो जाए (इब्रानियों 6:6; देखें आयतें 4-6)। परमेश्वर आपके मनों को कोमल बनाए रखने में, सहायता करे (2 राजा 22:19)!

गलतफ़हमियां दूर करने में व्यस्त (मत्ती 12:38-45; लूका 11:16, 24-26, 29-36)

यीशु के तर्क में दोष न निकाल पाने और उसकी डांट से आहत, उसके शत्रुओं ने एक और चाल चलने की कोशिश की: ''इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने उससे कहा, हे गुरु,[24] हम तुझ से एक चिह्न देखना चाहते हैं'' (मत्ती 12:38)। इसकी ढिठाई पर ध्यान दें। मसीह का पीछा करते-करते उन्होंने एक के बाद एक आश्चर्यकर्म देखे थे। उसी दिन, उन्होंने एक तिहरा आश्चर्यकर्म भी देखा था। इसके अलावा उन्हें और प्रमाण क्या चाहिए था? लूका ने कहा है कि उन्होंने ''उसकी परीक्षा करने के लिए उससे *आकाश का* एक चिह्न मांगा'' (लूका 11:16)। हो सकता है कि वे यीशु को आकाश से कोई चमत्कार करने के लिए कह रहे हों, जैसे एलिय्याह ने आकाश से आग प्रकट करवाई थी (1 राजा 18:36-38; 2 राजा 1:10)।

मसीह ''लोगों की मांग पर आश्चर्यकर्म'' नहीं करता था (मत्ती 4:3, 4; लूका 23:8, 9)। न ही उसने कभी सामान्य प्रदर्शन (''दिखाने के लिए'') वाला आश्चर्यकर्म किया था। इसके अलावा, वह जानता था कि कोई आश्चर्यकर्म चाहे वह आकाश से, पृथ्वी से या पृथ्वी के नीचे से हो, इन कठोर मन के आलोचकों को विश्वास दिलाने के लिए काफ़ी नहीं हो सकता है। उसने उज़र दिया:

> इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिह्न ढूंढते हैं;[25] परन्तु यूनुस [या योना] भविष्यवक्ता के चिह्न को छोड़[26] कोई और चिह्न उनको न दिया जाएगा।[27] यूनुस तीन रात-दिन[28] जल-जन्तु के पेट में रहा,[29] वैसे-ही मनुष्य का पुत्र तीन रात-दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा (मत्ती 12:39, 40)।

यह यीशु के पुनरुत्थान का छिपा हुआ हवाला था, ज़्योंकि अपनी मृत्यु व गाड़े जाने के तीसरे दिन उसने फिर से जी उठना था (मत्ती 16:21; 17:23; 20:19)। मसीह के शत्रुओं को उसकी बात समझ नहीं आई; उसके चेलों को भी नहीं। (यह यीशु द्वारा अपने प्रेरितों को अपनी होने वाली मृत्यु की घोषणा से पहले की बात है।) फिर भी पुनरुत्थान वह अन्तिम ''चिह्न'' था और है कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है (रोमियों 1:4)।

यीशु शास्त्रियों और फरीसियों (और उनसे प्रभावित होने वालों) को फिर डांटने लगा। उसने कहा कि नीनवे के दुष्ट लोग इतने बुरे नहीं थे, जितने वे थे और यह कि शीबा की मूर्तिपूजक रानी (''दक्षिण की रानी'') अधिक शुद्ध थी (मत्ती 12:41, 42; लूका 11:31, 32)। यह सिखाने के लिए कि यदि उसके आलोचक अपने मनों को खोल दें, तो उनके जीवन ''प्रकाश'' से भर जाएंगे, उसने अपने दो पसन्दीदा अलंकारों को आपस में मिला दिया (लूका 11:33-36)।

मसीह के चौंकाने वाले एक और उदाहरण में एक दुष्टात्मा के बारे में बताया गया है, जो किसी आदमी को छोड़ गई और फिर अपने साथ अपने से भी दुष्ट सात और दुष्टात्माओं को ले आई (मत्ती 12:43-45; लूका 11:24-26)। इस छोटे से दृष्टांत की सामान्य प्रासंगिकता हो सकती है; परन्तु संदर्भ में यह यहूदी आत्मिक अगुओं के लिए था। बाबुल की दासता के बाद, उन्होंने मूर्तिपूजा के ''भूत'' को निकाल दिया था-परन्तु उन्होंने उस ''दुष्टात्मा'' को निकालकर परमेश्वर में सकारात्मक विश्वास और उसकी इच्छा को मानना नहीं अपनाया था। जिस कारण अब उनमें पहले से भी बुरी ''सात दुष्टात्माएं'' अर्थात अज्ञानता, पूर्वधारणा, अपने आप में धर्मी, कपट, अविश्वास, विद्रोह और मूल्यों की बेकदरी जैसी ''दुष्टात्माएं'' आ गई थीं।[30]

नये सम्बन्ध बनाने में व्यस्त (मत्ती 12:46-50; मरकुस 3:31-35; लूका 8:19-21; 11:27, 28[31])

यीशु के इतना ज़ोर से बोलने पर, भीड़ में से एक औरत पुकार उठी, ''धन्य वह गर्भ

जिस में तू रहा; और वे स्तन, जो तू ने चूसे'' (लूका 11:27ख)। मरियम की भविष्यवाणी के पूरे होने की बात केवल यहां पर ही मिलती है (लूका 1:48)। मसीह ने उज़र दिया, ''हां; परन्तु धन्य वे हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं'' (लूका 11:28)।[32]

यह कहकर यीशु अपनी मां का अपमान नहीं कर रहा था, जिससे वह प्रेम करता था।[33] बल्कि वह यह ज़ोर दे रहा था कि परमेश्वर का आज्ञाकारी पुत्र होना मसीह की माता होने से महत्वपूर्ण है। हम सबके लिए यह कितना उत्साहित करने वाला होना चाहिए! प्रभु की शारीरिक माता तो केवल एक हो सकती थी, परन्तु उसके चेले हम सब हो सकते हैं।

इस महत्वपूर्ण सच्चाई पर कुछ देर बाद फिर से ज़ोर दिया गया। भीड़ को सिखाना जारी रखते हुए (मत्ती 12:46), ''उसकी माता और उसके भाई[34] आए'' (मरकुस 3:31क)। भीड़ में उसके पास न जा सकने के कारण,[35] उन्होंने संदेश भेजा कि वे उससे मिलना चाहते हैं (3:31ख, 32)। हम नहीं जानते कि वे यीशु को ज़्यों ढूंढ़ रहे थे। मरकुस 3:21 और 3:31 आपस में जुड़े लगते हैं; शायद परिवार के लोग उसे कुछ आराम दिलाने के लिए ले जाने आए थे। जो भी कारण हो, ''तेरी माता और तेरे भाई बाहर तुझे ढूंढ़ते हैं'' (मरकुस 3:32) शब्दों ने यीशु के उपदेश में रुकावट डाल दी।[36]

उज़म गुरु व मसीह ने इस रुकावट को भी यह पूछकर कि ''कौन है मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई?'' (मत्ती 12:48) सिखाने का अवसर बना दिया। अपने चेलों की ओर इशारा करते हुए, जो पास ही बैठे थे, उसने कहा, ''मेरी माता और मेरे भाई ये हैं! ज़्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहन और माता है'' (मत्ती 12:49ख, 50)। लूका ने यीशु की इस घोषणा को इन शब्दों में व्यक्त किया है: ''मेरी माता और मेरे भाई ये ही हैं, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं'' (लूका 8:21)।

मसीह पारिवारिक सम्बन्ध का महत्व कम नहीं कर रहा था। उसकी नज़र में पारिवारिक ज़िम्मेदारियां बहुत महत्वपूर्ण थीं (मत्ती 15:4-6; यूहन्ना 19:26, 27; देखें 1 तीमुथियुस 5:8)। परन्तु एक बार फिर वह ज़ोर दे रहा था कि सांसारिक परिवार से भी ऊंचा और महान एक सम्बन्ध है: उसके और उसके पिता के साथ हमारा आत्मिक सम्बन्ध। यह अहसास करना कि हम ''परमेश्वर का वचन सुनते और मानते'' हैं, सचमुच अद्भुत है (लूका 8:21; देखें मत्ती 7:21-27), यीशु के साथ हमारा उससे भी निकट सम्बन्ध हो सकता है, जो अपनी माता और अपने शारीरिक भाइयों के साथ था![37]

मसीह के चेलों के लिए (और हमारे लिए भी) ये शब्द उत्साहवर्द्धक थे, परन्तु उन्हें इस दिन के संदर्भ में भी देखें, जब प्रभु पर इतनी बुरी तरह से आक्रमण किया गया था। उसे अपने पास समर्पित चेलों के एक समूह की आवश्यकता थी, जो उसके चले जाने के बाद कलीसिया के लिए बीज के रूप में काम करें। यह आवश्यक था कि नये सम्बन्ध, सदा तक रहने वाले हों।

सारांश

दिन अभी काफ़ी बाकी था। बहुत सी शिक्षाएं दी जानी शेष थीं, जिनमें कई प्रसिद्ध

आश्चर्यकर्म भी थे।[38] यदि मैं यीशु की जगह होता, तो मैं तो बहुत थक चुका होता। (विवाद, झगड़ा और आमना-सामना करना मेरे लिए सबसे थका देने वाला होता।) परन्तु दिन के बाकी भाग का हमारा अध्ययन अगले पाठों में होगा। अब इस व्यस्त बल्कि चौबीस घण्टे के व्यस्तम दिन का पर्दा गिराना होगा।

सभी आयतों में व्यावहारिक पाठ हैं।[39] परन्तु अब तक के हमारे अध्ययन का सार मत्ती 12:30 में मिलता है, जहां यीशु ने कहा, ''जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिथराता है।'' या तो हम यीशु की ओर हैं या नहीं। बीच का कोई रास्ता नहीं है। मैं किसकी ओर हूं? आप किसकी ओर हैं?

टिप्पणियां

[1]ए. टी. रॉबर्टसन, *ए हारमनी ऑफ द गॉस्पल्स फ़ॉर द स्टूडेंट्स ऑफ़ द लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड रोअ, 1950), 61. [2]इस दौरे को केवल लूका ने ही लिखा है, यद्यपि मत्ती और मरकुस में कफ़रनहूम से बाहर के दौरों पर अध्ययन करते हुए हमें इसके संकेत मिले थे। [3]''अधिकारी की नाईं'' पाठ देखें। [4]''प्रेम, आंसू और क्षमा'' पाठ का परिचय देखें। [5]यदि किसी नगर में यीशु और प्रेरितों को लोग भोजन न देते, तो ये स्त्रियां भोजन खरीदकर बनाती होंगी। हमें यह नहीं मानना चाहिए कि यह सहायता विलासिता के लिए थी, ज़्योंकि यीशु को हमेशा सबसे निर्धन लोगों में से दिखाया जाता है (लूका 9:48; 2 कुरिन्थियों 8:9; देखें मत्ती 17:24-26)। [6]''प्रेम, आंसू और क्षमा'' पाठ में हमने ज़ोर दिया है कि यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि पापिन स्त्री, जिसने शमौन के घर में यीशु पर तेल उण्डेला था, मरियम मगदलीनी ही थी। मरियम को दुष्टात्मा से चंगाई मिली थी, न कि वह पहले वेश्या थी। आश्चर्य की बात नहीं कि मरियम कृतज्ञ थी। [7]''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' मानचित्र देखें। [8]जे. डब्ल्यू. मैज़र्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 297. [9]वहीं। [10]NASB वाली मेरी बाइबल में ''घर'' पर यह मार्जिन नोट है: ''[मूलत:], *किसी घर में*।''

[11]इस पद की तुलना मरकुस 6:31 से करें। [12]बोलने में असमर्थता आमतौर पर सुनने में असमर्थता का भी संकेत होती थी, सो वास्तव में यह चौहरा आश्चर्यकर्म था। [13]मूल भाषा में वाक्य की रचना से एक सचेत स्वीकृति का संकेत मिलता है कि यीशु सचमुच ''दाऊद का पुत्र'' (अर्थात, मसीहा) ही होगा। [14]यूनानी शब्द के अनुवाद ''अपने घर'' का मूल अर्थ ''जो उसके साथ थे'' है। इनका यीशु से कुछ सम्बन्ध था। KJV में ''उसके मित्र'' है। NIV में ''उसका परिवार'' है। [15]यूनानी शब्द के अनुवाद ''पकड़ने'' को कई बार नये नियम में किसी को गिरफ़्तार करने के अर्थ में लिया जाता है (मत्ती 14:3; प्रेरितों 24:6)। इस शब्द से संकेत मिलता है कि उन्होंने उसे ज़बर्दस्ती अपने साथ ले जाने की योजना बनाई थी। [16]मानसिक तौर पर स्वस्थ न होने के हमारे पास बोल-चाल के कई शब्द हो सकते हैं। आप अपने लोगों की समझ के अनुसार इस शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं। [17]फरीसियों के परमेश्वर की निन्दा के आरोपों का लूका का वृत्तांत कभी किसी और समय और स्थान पर हुआ हो सकता है-परन्तु यह इतना मिलता-जुलता है कि इसका मत्ती और मरकुस के वृत्तांतों के साथ अध्ययन करने में लाभ हो सकता है। [18]''बालज़बूल'' (या बाल-ज़बूब) मूर्तियों के एक देवता का नाम था (2 राजा 1:2)। मूलत: इस नाम का अर्थ ''मक्खियों का सरदार'' है। इस संदर्भ में इस नाम का इस्तेमाल शैतान के लिए किया गया (मरकुस 3:22, 23)। [19]KJV में ''devils'' है, परन्तु डेविल अर्थात शैतान तो एक ही है। [20]मरकुस इन तर्कों को ''दृष्टांत'' कहता है (मरकुस 3:23)। दृष्टांतों पर

चर्चा हम ''मसीह का जीवन, भाग 3'' में करेंगे।

[21]इसका संकेत मिलता है। [22]आवश्यक नहीं कि यीशु के तर्क से यह साबित होता हो कि *वह* मानता था कि ये यहूदी दुष्टात्माओं को निकाल रहे हैं। यहूदी जादू-टोने के रीति-रिवाजों के अन्धविश्वास और ''आज्ञा देकर'' यीशु द्वारा दुष्टात्माएं निकालने में बहुत अन्तर था। [23]शैतान को ''बांधने'' के सम्बन्ध में ''प्रकाशितवाक्य, भाग 5'' में ''शैतान को बांधना'' पाठ देखें। [24]उनके यीशु को सम्मान का पद देने में कपट था। (इस पद की तुलना लूका 7:40 से करें।) [25]1 कुरिन्थियों 1:22 देखें। [26]देखें मत्ती 16:4. [27]क्योंकि यीशु चिह्न (आश्चर्यकर्म) करता रहा, इसका अर्थ यही होगा कि कोई *अतिरिक्त* चिह्न (उन आश्चर्यकर्मों के अलावा जो हो रहे थे) अर्थात योना के चिह्न (अर्थात, पुनरुत्थान) के अलावा कोई चिह्न नहीं दिया जाना था। [28]जहां तक हम जानते हैं, यीशु ने कब्र में एक पूरा दिन, दो आंशिक दिन और दो रातें बिताईं, जिस कारण कुछ लोगों को ''तीन दिन और तीन रात'' की बात खटकती है। मूल उज़र यह है कि यहूदी लोग दिन के भाग की गणना पूरे दिन के रूप में करते थे। देखें ''तीन दिन और तीन रात।'' [29]KJV में ''व्हेल'' है, परन्तु यूनानी शास्त्र में ''समुद्री जन्तु'' है। NKJV में ''बड़ी मछली'' है, जो पुराने नियम की कहानी में भी है (योना 1:17)। हिन्दी में ''मगरमच्छ'' है। कुछ लोगों का दावा है कि योना और बड़ी मछली की कहानी केवल ''परीकथा'' ही है, परन्तु यीशु ने कहा कि ऐसा सचमुच हुआ था। [30]मुझे गलत न समझें। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि दुष्टात्मा वास्तविक आत्मिक जीव नहीं थी (या नहीं हैं), बल्कि मैं कुछ शब्दों में इस *दृष्टांत* का *समानान्तर* दिखाने की कोशिश कर रहा हूं-दुष्टात्माओं वाले आदमी और पाप से भरे यहूदी अगुओं में समानता थी। आवश्यक नहीं था कि ये अगुवे दुष्टात्मा से ग्रस्त हों, परन्तु वे निश्चय ही शैतान और उसकी दुष्टात्माओं से प्रभावित थे।

[31]यीशु के परिवार की कहानी लूका 8 में शामिल है, जो सुनने और आज्ञा मानने की आवश्यकता को दिखाती है। जहां पर मत्ती और मरकुस ने कहानी दी है, वहां लूका स्त्री के यह कहने की घटना को शामिल करता है कि मसीह की माता ''धन्य'' है (लूका 11:27, 28)। क्योंकि ये सभी घटनाएं मूलत: एक ही शिक्षा देती हैं, इसलिए मैं उन्हें इकट्ठे कर रहा हूं। [32]यहां और मत्ती 12:48-50 में यीशु के शब्द मरियम की भ्रांतिपूर्ण उपासना पर ज़बर्दस्त अभियोग लगाते हैं। [33]इसका प्रमाण इस तथ्य से मिल गया था कि मरने से पहले उसकी एक चिन्ता अपनी मां के लिए थी (यूहन्ना 19:26, 27)। [34]बाद के हस्तलेखों में ''और उसकी बहनें'' जोड़ा गया है, परन्तु पुराने हस्तलेखों में यह बात नहीं जोड़ी गई। मत्ती 13:55, 56 के अनुसार यीशु के चार भाई और कम से कम दो बहनें थीं। [35]इस पद की तुलना मरकुस 2:2, 4 से करें। [36]इस पर अतिरिक्त चर्चा के लिए अगला प्रवचन देखें। [37]इस चर्चा को ''हमारे दो परिवार'' पाठ में विस्तार दिया जाएगा। [38]इस पाठ के परिचय पर विचार करें। [39]आप इन में से कुछ (जैसे मत्ती 12:33-37, जो हम सब को दोषी ठहराती है) पर विचार कर सकते हैं।